KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 8

प्रीतेश जोशी

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



6. सांची की मूर्तिकला को समझने में बौद्ध-साहित्य के ज्ञान से कहां तक सहायता मिलती है ?

उत्तर :

सांची की विभिन्न मूर्तियों को बौद्ध साहित्य के द्वारा जाना गया –

1. पत्थर में गढ़ी कथाऐं :-

सांची के उत्तरी तोरणद्वार के एक हिस्से में एक मूर्ति है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्तियां

गाँव का दृश्य

वेसन्तर

- पहली बार देखने पर तो इस मूर्तिकला अंश में फूस की झोंपड़ी और पेड़ों वाले ग्रामीण दृश्य का चित्रण मिलता है।
- परन्तु जब इतिहासकारों ने सांची की इस मूर्तिकला को गहराई से अध्ययन किया, तो वे इसे वेसान्तर जातक से लिया गया एक दृश्य बताते हैं।
- यह कहानी एक ऐसे दानी राजकुमार की है जिसने अपना सब कुछ एक ब्राह्मण को सौंप दिया और स्वयं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चला गया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

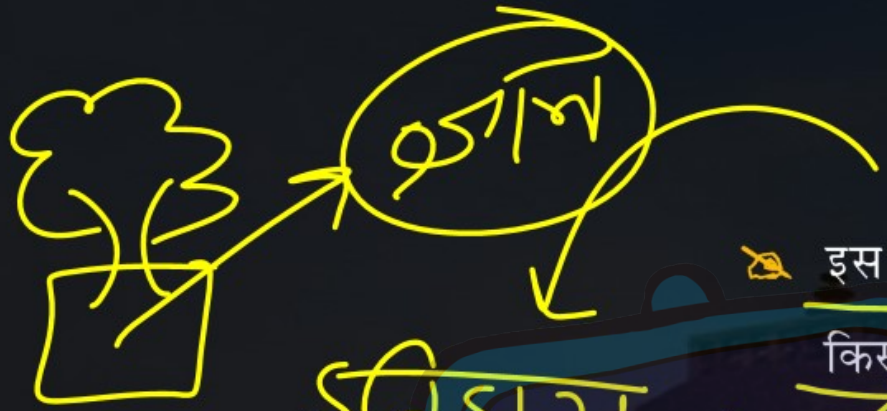

- इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि अक्सर इतिहासकार किसी मूर्तिकला की व्याख्या लिखित साक्ष्य के साथ तुलना के द्वारा करते हैं।

2. उपासना के प्रतीक :-

- बौद्ध मूर्तिकला को समझने के लिए इतिहासकारों को बुद्ध के चरित लेखन के बारे में जानकारी प्राप्त करनी पड़ी।
- बौद्ध चरित लेखन के अनुसार एक वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कई प्रारम्भिक मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में ना दिखाकर उसके स्थान पर प्रतीकों को दर्शाया।
- जैसे एक मूर्ति में बुद्ध के स्थान पर बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति वाला वृक्ष दर्शाया गया है।
- बुद्ध के ध्यान की दशा तथा स्तूप महापरिनिब्बान के प्रतीक बन गए।
- 'चक्र' का प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया है। पेड़ का तात्पर्य केवल पेड़ नहीं था वरन् यह बुद्ध के जीवन की घटना का प्रतीक है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

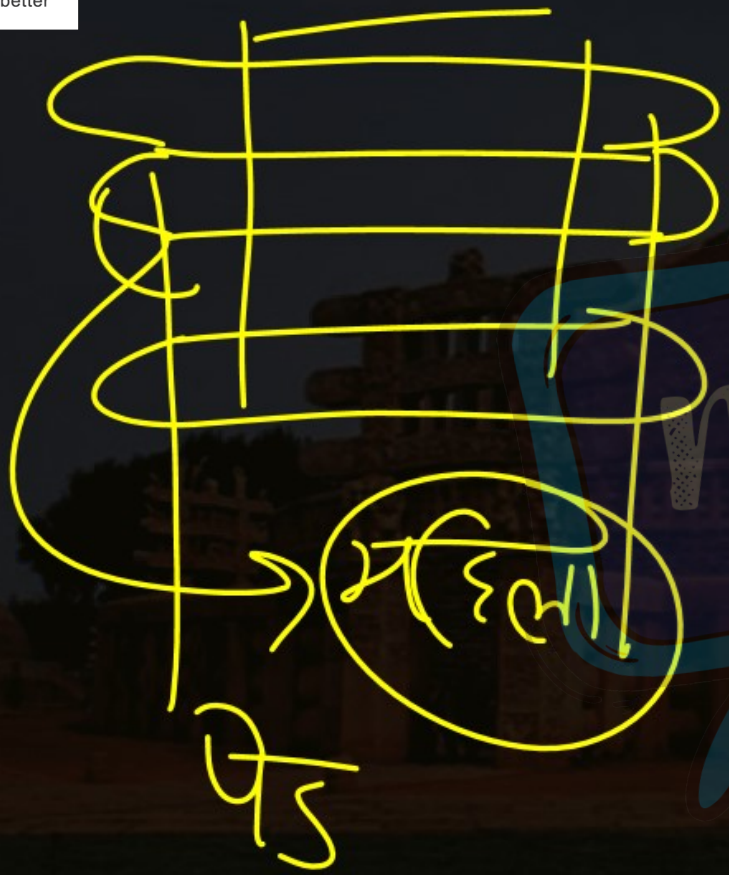

3. लोक परंपराऐं :-

- सांची में उत्कीर्णित बहुत सी अन्य मूर्तियां शायद बौद्ध मत से सीधी जुड़ी नहीं थीं।
- इनमें कुछ सुंदर स्त्रियां भी मूर्तियों में उत्कीर्णित हैं जो तोरणद्वार के किनारे पर पेड़ पकड़ कर झूलती हुई दिखती हैं।
- शुरू-शुरू में विद्वान इस मूर्ति के महत्व के बारे में थोड़े असमंजस में थे।
- इस मूर्ति का त्याग और तपस्या से कोई रिश्ता नजर नहीं आता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

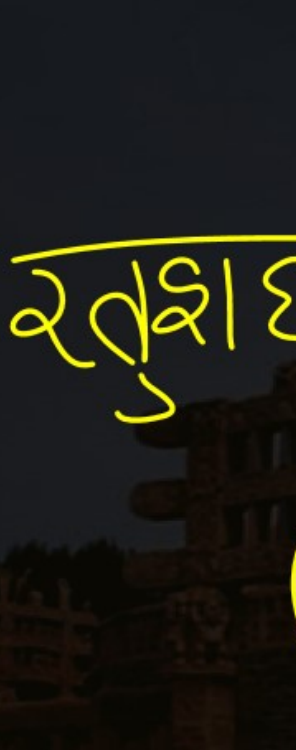

- यद्यपि साहित्यिक परंपराओं के अध्ययन से वे समझ पाये कि यह संस्कृत भाषा में वर्णित शालभंजिका की मूर्ति है।
- लोक परंपरा में यह माना जाता था कि इस स्त्री द्वारा छुये जाने से वृक्षों में फूल खिल जाते थे और फल आने लगते थे।
- ऐसा लगता है कि यह एक शुभ प्रतीक माना जाता था और इस कारण स्तूप के अलंकरण में यह प्रयुक्त हुआ।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

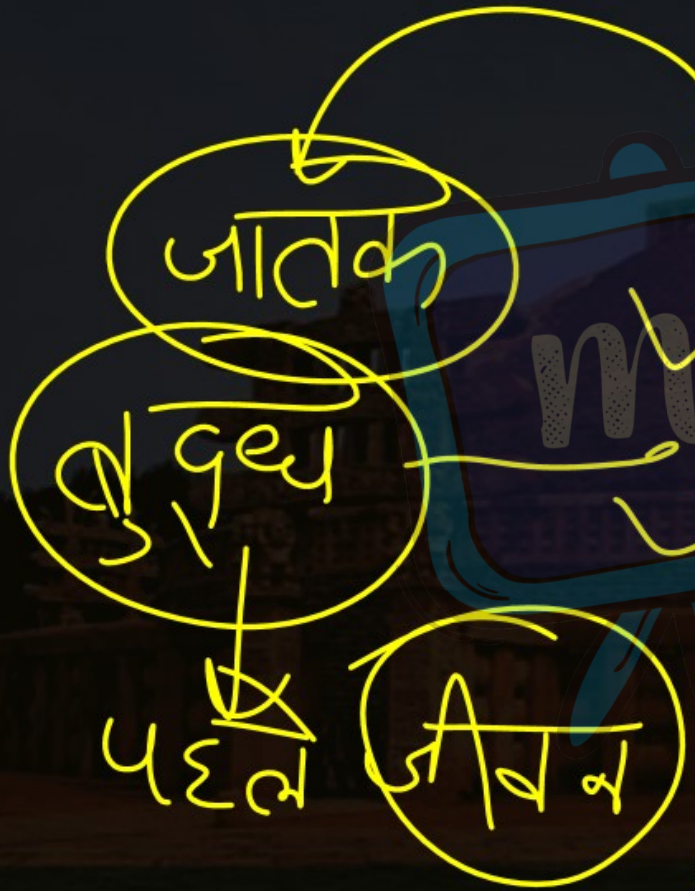

4. सांची की मूर्तियों में पाये गये प्रतीकों का लोक परंपरओं में उभरना :-

- जानवरों के कुछ बहुत खूबसूरत उत्कीर्णन यहां पर पाये गये हैं।
- इन जानवरों में हाथी, घोड़े, बंदर और गाय-बैल शामिल हैं।
- हालांकि सांची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियां हैं।
- ऐसा लगता है कि लोगों को आकर्षित करने के लिए यहां जानवरों को उत्कीर्णन किया गया था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

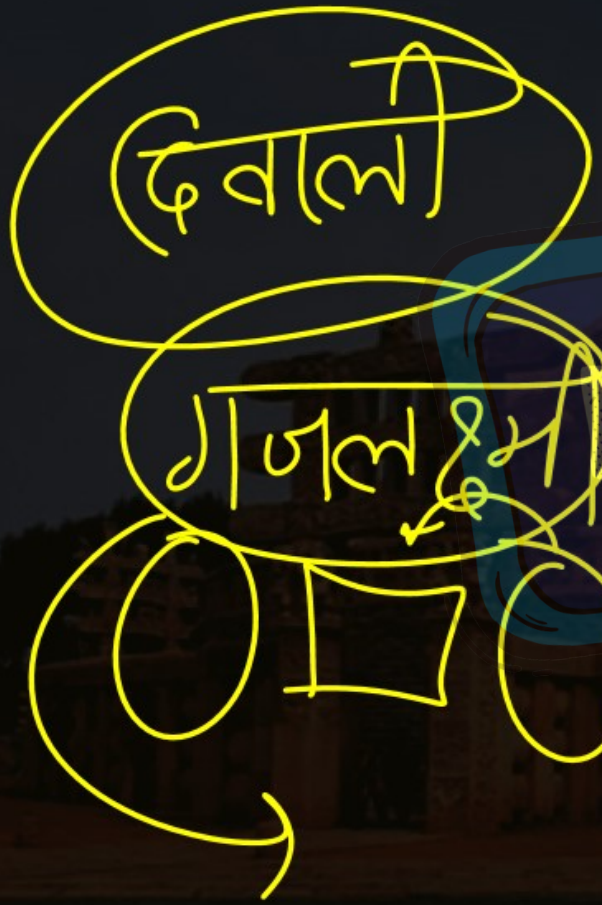

- साथ ही जानवरों को मनुष्य के गुणों के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
- जैसे हाथी शक्ति और ज्ञान के प्रतीक माने जाते थे।

5. कमलदल और हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति का उत्कीर्णन :-

- इस मूर्ति में हाथी महिला पर जल छिड़क रहे हैं।
- जैसे – वे उसका अभिषेक कर रहे हैं।
- कुछ इतिहासकार उन्हें बुद्ध की माँ माया से जोड़ते हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साँप

- कुछ उन्हें लोकप्रिय देवी 'गजलक्ष्मी' मानते हैं क्योंकि गजलक्ष्मी ओर सौभाग्य लाने वाली देवी थीं जिन्हें प्रायः हाथियों से जोड़ा जाता है।
- कुछ इन मूर्तियों को देखने वाले माया और गजलक्ष्मी दोनों से जोड़ते हैं।

6. स्तम्भों पर सर्पों का उत्कीर्णन :-

- कुछ स्तंभों पर सर्पों का उत्कीर्णन है।
- यह प्रतीक (सर्प) ऐसी लोग परंपराओं से लिया गया प्रतीत होता है जिसका ग्रंथों में हमेशा जिक्र नहीं होता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जानकारी

- दिलचस्प बात यह है कि इतिहासकार जेम्स-फर्गुसन ने सांची को वृक्ष और सर्प पूजा का केन्द्र माना था।
- वे बौद्ध साहित्य से अनभिज्ञ थे। तब तक ज्यादातर बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद नहीं हुआ था। इसलिए उन्होंने सिर्फ उत्कीर्णित मूर्तियों का अध्ययन करके अपने निष्कर्ष निकाले थे।
- इस प्रकार से साँची की मूर्तिकला को समझने के लिए बौद्ध साहित्यों ने अपना बड़ा योगदान दिया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

7. यहां साँची से लिए गए दो परिदृश्य दिए गए हैं। आपको इनमें क्या नजर आता है ? वास्तुकला, पेड़-पौधे और जानवरों को ध्यान से देखकर तथा लोगों के काम धंधों को पहचान कर यह बताइए कि इनमें से कौनसे ग्रामीण और कौनसे शहरी परिदृश्य हैं ?

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रामीण (I)



यह चित्र ग्रामीण परिदृश्य से संबंधित है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पेड़

- इसमें ज्ञात होता है कि ग्रामीण लोगों के जीवन में पशुओं का अत्यधिक महत्व था।
- यह चित्र पशुओं, पेड़-पौधों के प्रति बौद्धों के करूणामयी दृष्टिकोण तथा अहिंसा के प्रति अटूट श्रद्धा की जानकारी देता है।
- यद्यपि साँची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियाँ चित्रित हैं क्योंकि लोगों को आकर्षित करने के लिए जानवरों को उत्कीर्णित किया गया है।
- साथ ही जानवरों को मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में भी प्रयोग किया जाता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- साँची में पेड़-पौधों को भी प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।
- पेड़ का अर्थ एक पेड़ नहीं था वरन् वह बुद्ध के जीवन की घटना का प्रतीक था।
- चित्र के शीर्ष भाग में पशुओं के साथ बौद्ध-भिक्षुओं के देखने से प्रतीत होता है कि वे पशुओं को कितना महत्व देते थे।
- निचले भाग में पशुओं के कटे हुए सिर भी हैं जो शायद उस समय प्रचलित रही बलिप्रथा को दर्शाते हों।
- चारों ओर जालीदार चित्रकारी व नक्काशी का सर्वोत्तम नमूना है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

(II)



- यह चित्र शहरी परिदृश्य से संबंधित है।
- इसमें तत्कालीन वास्तुकला एवं मूर्तिकला की विशेषताओं के बारे में जानकारी मिलती है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इस चित्र में बड़े सुन्दर स्तम्भ, स्तम्भों के ऊपर उल्टे कलश तथा उनके ऊपर विभिन्न पशुओं को उत्कीर्णत किया गया है।
- कलशों के ऊपर दो दिशाओं में घोड़े तथा शेर की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। पशुओं के चित्र मनुष्य के गुणों के प्रतीक के रूप में दर्शाई गई है।
- इसके प्रथम दो भागों में एक आसन पर एक राजा बैठा हुआ है जिसके ऊपर एक छत्र लगा है तथा उसके पीछे दो सेवक पंखा कर रहे हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वास्तुकला

- स्तम्भों के नीचे जालीदार सुन्दर कार्य दर्शाया गया है। उसके नीचे झरोखे हैं जिनमें शानदार नक्काशी प्रदर्शित है।
- इस चित्र के निचले भाग में भिक्षु, बुद्ध तथा बोधिसत्तों की उपासना में लीन है।
- इसमें वाद्ययंत्र बजाते हुए भी लोगों को दिखाया गया है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

8. वैष्णववाद और शैववाद के उदय से जुड़ी वास्तुकला और मूर्तिकला के विकास की चर्चा कीजिए।

उत्तर :

- वास्तुकला :- वैष्णववाद तथा शैववाद के अन्तर्गत अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया गया।
- देवी-देवताओं की मूर्तियों को रखने के लिए मंदिर बनाये गये।
- शुरू में मंदिर एक चौकोर कमरे की तरह थे जिन्हें गर्भगृह कहा जाता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्त्य

- इनमें एक दरवाजा होता था जिससे उपासक मूर्ति की पूजा करने के लिए भीतर प्रविष्ट हो सकता था।
- धीरे-धीरे गर्भगृह के ऊपर एक ढांचा बनाया जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था।
- मंदिरों की दीवारों पर अक्सर भित्ति चित्र उत्कीर्ण किये जाते थे।
- बाद के युगों में मंदिर स्थापत्य का काफी विकास हुआ तथा मंदिरों के साथ विशाल सभास्थल, ऊँची-ऊँची दीवारें तथा तोरण भी बनाये जाने लगे साथ ही जल आपूर्ति का भी इंतजाम किया जाने लगा।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- शुरू-शुरू के मंदिरों की एक खास बात यह थी कि इनमें से कुछ पहाड़ियों को काट कर खोखला करके कृत्रिम गुफाओं के रूप में बनाये गये थे।
- कृत्रिम गुफाऐं बनाने की परम्परा काफी पुरानी थी।

कैलाशनाथ मंदिर :-

- मंदिर बनाने की परम्परा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही।
- इसका सबसे विकसित रूप 8वीं सदी के कैलाशनाथ मंदिर में नजर आता है जिसमें पूरी पहाड़ी को काटकर उसे मंदिर का रूप दिया गया था जो बहुत ही आश्चर्यजनक व अद्भुत है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

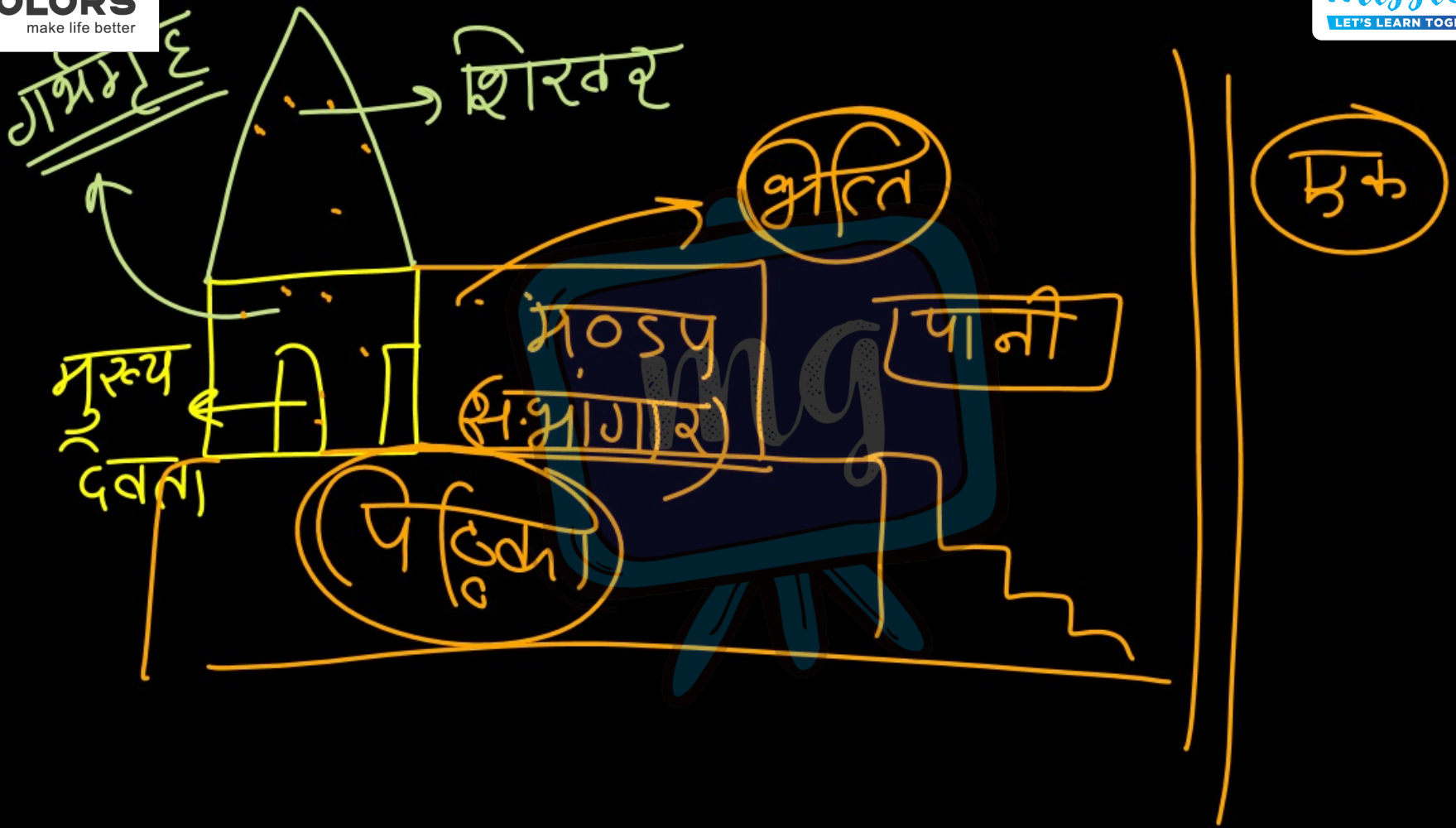

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्तिकला :-

- वैष्णववाद में कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है।
- लगभग छठी सदी की विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति जिसमें उन्हें पृथ्वी देवी को बचाते हुए दिखाया गया है, ऐहोल (कर्नाटक) में मिली है।
- छठी सदी की ही दुर्गा की एक मूर्ति महाबलीपुरम (तमिलनाडु) से प्राप्त हुई है।
- शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था लेकिन कई बार उनको मनुष्य के रूप में भी दिखाया गया है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

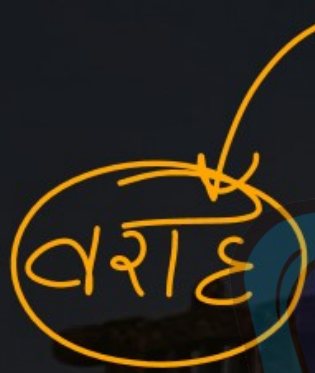

- सभी मूर्तियों के चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई उनकी मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे।
- देवताओं की मूर्ति बनाते समय उनकी खूबियों को उनके वस्त्रों, आभूषण, आयुधों और बैठने की शैली से इंगित किया जाता था।
- मूर्तियों के अंकन का मतलब समझने के लिए इतिहासकारों को उनसे जुड़ी कहानियों से परिचित होना पड़ता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

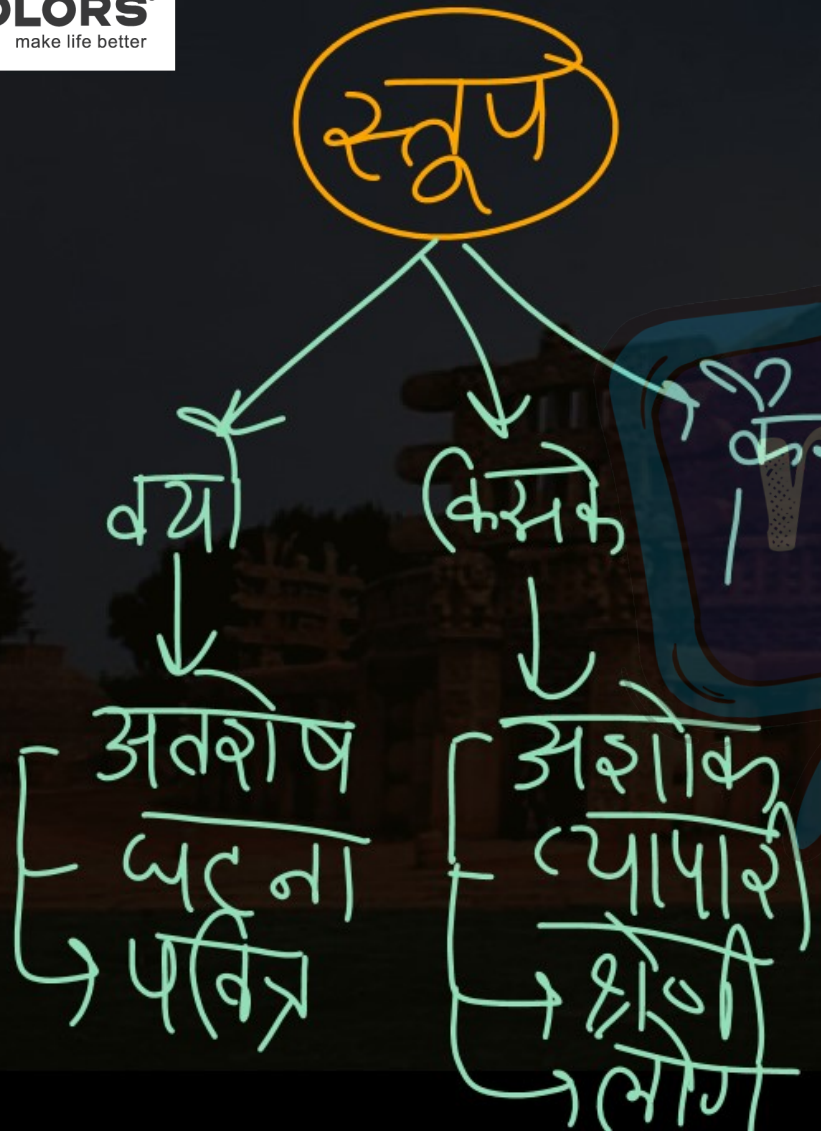

9. स्तूप क्यों और कैसे बनाऐ जाते थे ? चर्चा कीजिए।

उत्तर : स्तूप बनाने के कारण

- स्तूप ऐसे पवित्र टीले थे जहां पर बुद्ध से जुड़े अवशेष जैसे उनकी अस्थियां या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान गाड़ दिये गये थे।
- स्तूप बनाने की परंपरा बुद्ध से पहले से ही रही होगी, लेकिन बाद में वह बौद्ध धर्म से जुड़ गई।
- इनमें पवित्र अवशेष रहते थे इसलिए ये बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा के प्रतीक बन गए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

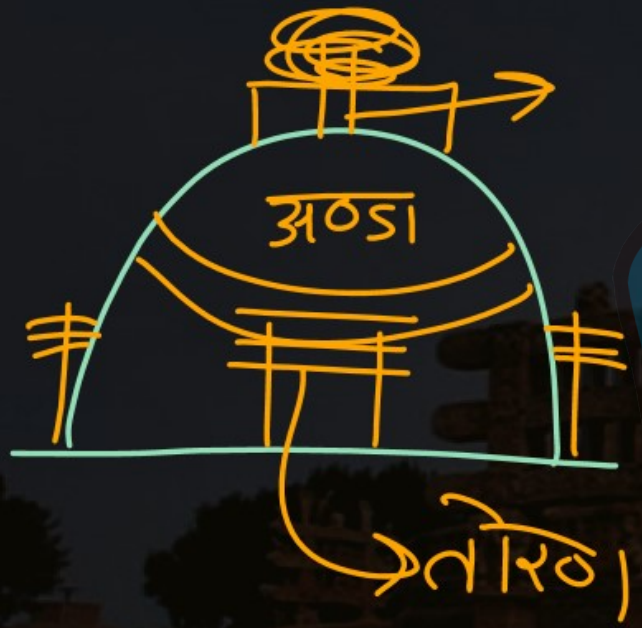

- अशोकावदान नामक बौद्ध ग्रंथ के अनुसार असोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से हर शहर में बाँटकर उनके ऊपर स्तूप बनाने के आदेश दिए।
- 200 ई. पू. तक भरहुत, साँची और सारनाथ में स्तूप बनाये जा चुके थे।

स्तूप की संरचना :-

- स्तूप का जन्म एक गोलार्द्ध लिये हुए मिट्टी के टीले से हुआ जिसे बाद में अंड कहा गया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- धीरे-धीरे इनकी संरचना जटिल हो गई क्योंकि इनमें कई चौकोर तथा गोल आकारों का संतुलन बनाया गया।
- अंड के ऊपर एक हर्मिका होती थी। यह छज्जे जैसा ढांचा देवताओं के घर का प्रतीक था।
- हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे। जिस पर एक या अधिक छत्री लगी होती थी।
- टीले के चारों ओर पत्थर की वेदिका होती थी जो इस पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- ये पत्थर की वेदिकाऐं किसी बांस या काठ के घेरे के समान लगती थी।
- चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्वारों पर खूब नक्काशी की गई थी।
- उपासक इन स्तूपों के पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके टीले को दाईं ओर रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे मानो वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुकरण कर रहे हों।